एफ.आर.आई. वैज्ञानिकों के डेढ़ दशक के शोध का परिणाम 'मीलिया-धूबिया'

विदेशी मुद्रा बचेगी, किसान व उद्योगपति होंगे मालामाल

खेत में खड़ा मीलिया-धूबिया एग्रो फोरैस्ट, संगोष्ठी में पहुंचे हुए वैज्ञानिक।

- **फेस के साथ-साथ कच्चे माल के लिए भी आएगा मीलिया काम**
- **सफेदा-पापुलर से सिर्फ तैयार होता कच्चा माल, मीलिया से तैयार होगा फेस भी**

यमुनानगर, 2 फरवरी (त्यागी): यमुनानगर जैसे प्लाईवुड उत्पाद जिले व देश के अन्य प्लाईवुड उत्पादन करने वाले राज्यों के लिए वन अनुसंधान संस्थान (एफ.आर.आई.), देहरादून द्वारा करीब डेढ़ दशक की रिसर्च के बाद ऐसे उत्पाद को तैयार किया गया जो पापुलर व सफेदा का विकल्प तो हो सकता है, साथ ही इससे फेस भी तैयार किया जा सकेगा। अभी तक प्लाईवुड पर फेस के लिए यहां के उद्योगपतियों को दूसरे देशों के उत्पाद पर निर्भर रहना पड़ता था जिससे विदेशी मुद्रा का नुक्सान होना था और यह महंगी भी बहुत पड़ती थी। वन अनुसंधान संस्थान द्वारा मीलिया-धूबिया नाम के इस उत्पाद पर काम किया गया है और इसका प्रचार-प्रसार किया जा रहा है ताकि प्लाईवुड में फेस के लिए यह अच्छा विकल्प साबित हो सके।

मीलिया-धूबिया नाम के इस एग्रो फोरैस्ट से जहां फेस तैयार होगा, वहीं इसकी लकड़ी जिस प्रकार सफेदा-पापुलर को प्लाईवुड के बीच में कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है, इसी प्रकार उसका भी प्रयोग होगा और यह मीलिया 2 तरह से काम करेगा। इतना ही नहीं, किसानों के लिए भी यह वरदान साबित होगा और किसानों को इससे अच्छी आमदनी हो सकती है। देश के कई राज्यों में इसका उत्पाद शुरू हो चुका है।

प्लाईवुड की अच्छी क्वालिटी के लिए करने होंगे प्रयास

गत दिवस वुड टैक्नोलॉजिस्ट के अध्यक्ष एस.सी. जौली जोकि विशेष रूप से केरल से यमुनानगर पहुंचे, ने इस सम्बंध में वन अनुसंधान संस्थान देहरादून द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन करवाया जिसमें भारी संख्या में प्लाईवुड उद्योग से जुड़े उद्योगपतियों, एसोसिएशन के सदस्यों व किसानों ने भाग लिया। आजीविका सुधार के लिए कृषिवानिक एवं काष्ठ प्रौद्योगिकी की भूमिका नाम से आयोजित इस संगोष्ठभ में विशेष रूप से आल इंडिया प्लाईवुड मैन्युफ्रैक्चरिंग एसोसिएशन के अध्यक्ष नरेश तिवारी पहुंचे व उन्होंने इस संगोष्ठी का उद्घाटन किया। मौके पर उन्होंने कहा कि प्लाईवुड की क्वालिटी अच्छी बनाने के लिए अधिक प्रयास करने होंगे तथा एक्सपोर्ट को बढ़ाना होगा। मौके पर डा. ए.के. पांडे ने सभी प्रतिभागियों व मुख्य वक्ताओं का स्वागत करते हुए संगोष्ठी के उद्देश्यों के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य बताया। उन्होंने बताया कि इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य किसानों, सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों, वन विभागों, स्वयं सहायता समूहों, क्रेता-विक्रेताओं, काष्ठ उद्योग एवं अन्य की कृषिवानिक एवं काष्ठ प्रौद्योगिकी से जुड़ी समस्याओं के निवारण हेतु एक मंच उपलब्ध करवाने का प्रयास किया है। इससे कृषिवानिक एवं काष्ठ प्रौद्योगिकी को लाभकारी बनाकर उसका उत्पादन बढ़ाया जा सकेगा। मौके पर वन अनुसंधान संस्थान द्वारा किए गए शोध को वुड इंडस्ट्रीज एवं किसानों को उपलब्ध करवाए जाने का प्रयास किया गया।

फेस के लिए है अच्छा विकल्प

प्लाईवुड मैन्युफ्रैक्चरिंग एसोसिएशन के प्रधान देवेन्द्र चावला ने कहा कि एफ.आर.आई. में मीलिया पर काम किया गया है और इसका प्रचार होना चाहिए तथा प्लाईवुड में फेस के लिए यह अच्छा विकल्प हो सकता है।

वुड टैक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष व संगोष्ठी के संयोजक व आयोजक एस.सी. जोली ने कहा कि प्लाईवुड इंडस्ट्रीज को बढ़ाने और इसके सुधार की आवश्यकता है। इस अवसर पर वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के विशेषज्ञ डा. डी.पी. खली, डा. अशोक कुमार व डा. रामबीर सिंह ने प्लाईवुड टैक्नोलॉजी, मीलिया अधारित कृषिवानिक पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए इसके बारे विस्तार से जानकारी दी। एफ.आर.आई. के अन्य विशेषज्ञ डा. युसूफ, डा. अमित पांडे, डा. शैलेन्द्र कुमार व डा. देवेन्द्र कुमार आदि ने भी इस विषय पर अपने विचार रखे। मौके पर काष्ठ प्रौद्योगिकी संस्था के पदाधिकारी एफ.आर.आई. के डा. देवेन्द्र, डा. रामबीर, वैज्ञानिक अजय गुलाटी आदि उपस्थित रहे। इस संगोष्ठी में पश्चिमी उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा व पंजाब के किसान, गैर सरकारी संगठन, अनुसंधानकर्त्ता व उद्योगपति भारी संख्या में एकत्रित हुए।

7 से 8 वर्षों में तैयार हो जाती है मीलिया फॉरैस्ट

वुड टैक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष एस.सी. जोली व एफ.आर.आई. के विशेषज्ञों ने मीलिया के सम्बंध में बताया कि पापुलर व सफेदा की तरह मीलिया एग्रो फोरैस्ट भी 7 से 8 वर्ष में तैयार हो जाता है। इसे चाहे तो किसान 6 वर्ष में भी काट सकता है लेकिन पूर्ण रूप से यह 7 से 8 वर्ष में ही मैच्युर होता है। मीलिया को प्रयोग में लाने पर जहां हमारी विदेशी करंसी बचेगी व किसानों एवं उद्योगपतियों को भी अधिक लाभ मिल सकेगा।

जोली ने बताया कि एफ.आर.आई. में लकड़ी पर कार्य करने वाले लगभग 17 विभाग हैं। हर विभाग का अपना अलग काम है। एफ.आर.आई. द्वारा ही मीलिया की खोज की गई है और इसका उत्पाद शुरू कर दिया गया है। इसी के बारे में विस्तार से जानकारी देने के लिए जिले के उद्योगपतियों व आस पास के प्रांतों से किसानों को बुलाया गया था ताकि उन्हें इस उत्पाद की जानकारी मिल सके और भविष्य में इसका लाभ उठाया जा सके।